International Journal of Applied Research 2015; 1(6): 156-160

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(6): 156-160
www.allresearchjournal.com
Received: 22-03-2015
Accepted: 26-04-2015

डॉ॰ किरण ग्रोवर
एसो ॰प्रो ॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
डी ॰ए ॰वी॰ कॉलेज, अबोहर। चलभाष–
094783–20028

Correspondence:
डॉ॰ किरण ग्रोवर
एसो ॰प्रो ॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
डी ॰ए ॰वी॰ कॉलेज, अबोहर। चलभाष–
094783–20028

इतिहास बोध के परिदृश्य में 'कितने पाकिस्तान': मनुष्यता का नव्य इतिहास

डॉ॰ किरण ग्रोवर

सारांश
मनुष्य को अपने जीवन में सभ्यता और संस्कृति को जानने की सदैव जिज्ञासा होती है। अतीत काल के वृतान्तों को प्रत्यक्ष रुप से उपस्थित करने वाला तत्व इतिहास है। इतिहास भूतकाल की स्थिति तथा भविष्य की अदृश्य सृष्टि को ज्ञान रुपी किरणों द्वारा सदा आलोकित करता रहता है। अतीत, वर्तमान व भविष्य के अविभाज्य गतिशील सम्बन्ध को समझना इतिहास बोध है।रचना में इतिहास बोध की अनुभूति इतिहास की संवेदनात्मक, रागात्मक तथा आवेगात्मक प्रतिक्रिया से उत्पन्न होती है। परिवेश के यथार्थ को गहरी संवेदना के साथ व्यक्त करने वालों में कमलेश्वर का विशिष्ट स्थान है। कमलेश्वर जी के दीर्घ अन्तर्चिन्तन का परिणाम है:'कितने पाकिस्तान'। लेखक ने विवेच्य उपन्यास में सांप्रदायिकता, कलुषित राजनीति, पूंजीवादी संस्कृति के स्वरूप को, भूमंडलीकरण की भयानक स्थिति को, भूमंडलीकरण के उपरान्त की सांस्कृतिक तस्वीर को, अपसंस्कृति को, मानवीय मूल्यों के ह्रास की स्थिति को, अलगाव की समस्या को दर्शाया है। कमलेश्वर जी हिन्दी, उर्दू, भाषा और साहित्य का मिला–जुला इतिहास लिखना चाहते थे, इस उपन्यास में इतिहास की भरमार है। संभवतः कमलेश्वर जी का 'कितने पाकिस्तान'उपन्यास मनुष्यता का नया इतिहास लिखने की कोशिश में बेचैन प्रतिबिम्बित होता है, इसी में कमलेश्वर जी की सार्थकता व प्रासंगिकता निहित है।

बीज शब्दः– इतिहास बोध, कमलेश्वर, मनुष्यता, नव्य इतिहास।

मूल प्रतिपादनः–
इतिहास स्वतः अतीत का न होकर अतीत की घटनाओं का तथ्यात्मक विवरण होता है। अतीत काल के वृतान्तों को प्रत्यक्ष रुप से उपस्थित करने वाला तत्व इतिहास है। इतिहासकार अतीत की घटनाओं को परिवर्तित नहीं कर सकता। इतिहास अतीत की घटनाओं का ब्यौरा होकर भी वह वर्तमान के लिए प्रेरक शक्ति है जो मानव की प्रगति एवम् उन्नति के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। इतिहास भूतकाल की स्थिति तथा भविष्य की अदृश्य सृष्टि को ज्ञान रुपी किरणों द्वारा सदा आलोकित करता रहता है। इसलिए इतिहास अतीत को जीवित रखने का एक साधन मात्र है जिसमें मानव जीवन के ज्ञान का भंडार निहित रहता है।

इतिहास वह संचित ज्ञान राशि है जिसमें मानवीय स्वभाव तथा चेतना कर्म, स्वप्नों का सब कालों के लिए समावेश होता है अतः इतिहास किसी देश के ज्ञान का वह संगम स्थल है जिसमें वहां की जनता,राजवंश परम्पराओं का राजनैतिक विकास, सामाजिक, आर्थिक संस्थाएं,उसके धर्म,दर्शन, संस्कृति एवम् रूचि का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। मनुष्य को अपने जीवन में सभ्यता और संस्कृति को जानने की सदैव जिज्ञासा होती है। इस तथ्य को जानने के लिए मानव इतिहास का द्वार खटखटाता है। जब हम महान पुरुषों, महिलाओं के शानदार कृत्यों को पढ़ते हैं, उस समय अनायास ही हम पुराने युग में प्रवेश करते हैं। इतिहास मानवता का देवालय है जहां जनता, राजवंश, घटनाएं,सामाजिक, आर्थिक संस्थाएं, उनके धर्म, दर्शन, संस्कृति ,रहन –सहन मूर्तिवत स्थान पाते हैं।[1]

इतिहास और साहित्य मनुष्य द्वारा लिखे जाते हैं। साहित्य बड़ा ही व्यापक अर्थ रखने वाला महान् गौरवपूर्ण शब्द हैं। प्रगतिशील, अनुभूतिशील जीवन का लिपिबद्ध अभिव्यक्तीकरण साहित्य है। साहित्य मनुष्य के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का सम्बन्ध विनिर्मित करता है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी के अनुसार 'साहित्य जीवन की आलोचना है , चाहे वह निबन्ध के रूप में हो, चाहे कहानी या काव्य के रूप में, उसे हमारे जीवन की आलोचना व व्याख्या करनी चाहिए।'[2] वास्तव में साहित्य मानवानुभूति के विभिन्न पक्षों की सत्यं, शिवं व सुन्दरं की संयुक्त अभिव्यक्ति है। साहित्य जीवन व जगत की गत्यात्मक भावमयी झांकी है जिसके सहारे नित्य नवीन आनन्द और कल्याण का विधान होता है। युग की ऐतिहासिक घटनाओं के पूर्ण प्रभाव से साहित्य की सृष्टि होती है। प्रत्येक देश व समाज का इतिहास ही साहित्य की उद्भावना करता है। इतिहास अतीत के रहस्यों को सुरक्षित रखने का प्रयास है और साहित्य उसे मांसलता प्रदान कर जावन के अनुरुप बनाता है।

इतिहास और साहित्य दोनों में किसी देश या जाति से सम्बन्धित राजनीतिक,, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति के संकेत विद्यमान होते हैं। संभवतः इतिहास और साहित्य का चिरन्तन सम्बन्ध है।

साहित्य में सत्य का तत्व सौन्दर्य से युक्त होकर मंगल कला बन जाता है। इतिहास का सत्य कठोर सत्य के रूप में यथावत् बना रहता है। इतिहास और साहित्य विचार और मस्तिष्क, भाव और हदय, गति और पथ की भांति साधन और साध्य है। प्रत्येक साहित्यिक कृति की रचना एक ऐतिहासिक घटना होती है, उसकी यह ऐतिहासिकता कलात्मक अनुभव में एक तथ्य होती है। इतिहास के बिना समाज का भविष्य संभव नहीं और भविष्य के बिना समाज का इतिहास भी। अतीत की हर घटना में उसकी ऐतिहासिकता, उसका अतीतपन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व होता है। इतिहास बोध न तो अतीतोन्मुखी होता है और न कोरा वर्तमान सापेक्ष बल्कि अतीत, वर्तमान व भविष्य को सूत्रबद्ध करने की कड़ी है। डा नामवर सिंह जी ने लिखा है कि इतिहास बोध ने हमीर चेतना,अन्तदृष्टि और संस्कारों का परिष्कार कर उसे परिवर्तित कर दिया है और वही साहित्य के क्षेत्र में नवीन संभावनाओं को निरूपित करता है।[3]डॉ राजेश्वर शर्मा जी ने कहा है कि इतिहास बोध से युग सापेक्ष संस्कृति की वस्तुपरकता को पहचाना जा सकता है चूंकि इतिहास ही काल सापेक्ष संस्कृति की आंख है,जीवन चेतना का प्रत्यक्षदर्शी है और भविष्य की संभावनाओं की व्याख्याता और विश्लेषक है।[4] डॉ मैनेजर पाण्डेय जी ने लिखा है कि अतीत, वर्तमान व भविष्य के अविभाज्य गतिशील सम्बन्ध को समझना इतिहास बोध है, इससे वर्तमान के अन्तर्विरोधों को समझने मे मदद मिलती है और अन्तर्विरोधों को हल करके आगे बढ़ने में भी सहायक होता है।[5]

इतिहास पल पल परिवर्तित होने वाली प्रक्रिया है इससे नई चेतनाएं अस्तित्व में आती हैं, इससे साहित्य अर्थवान बनता हैं। इतिहास जो है समाज में घटित होता है और साहित्य जो है समाज में उत्पन्न होता है।साहित्य और समाज की आन्तरिक और बाह्य प्रक्रियाएं,विकास, अन्तर्विरोध इतिहास बोध द्वारा मूल्यांकित होता है। इतिहास चेतना और साहित्य का आन्तरिक और बाह्य सम्बन्ध इन दोनों की द्वन्द्वात्मकता से सम्पन्न होता है। साहित्य में इतिहास का पुनर्वास संभव है। ऐतिहासिक सन्दर्भों का रुपान्तरण या रचनान्तरण प्रक्रिया द्वारा इतिहास बोध विश्वबोध में परिणित होता है। समसामयिक घटनाचक्र से जो केन्द्रीय संवेदना उभरती है, वही साहित्य का इतिहास बोध है।[6]युग सन्दर्भों और समय सत्यों की मूल्यगत पहचान सौन्दर्यशास्त्रीय परिवेश में इतिहास बोध की संज्ञा से रेखांकित की जा सकती है। सामयिक घटनाओं की मूल्य सता के प्रति प्रतिबद्धता का निर्वाह करने से रचनाकार की कृतियों में इतिहास बोध की अन्तर्ध्वनियां स्वतः ही मुखरित हो उठती हैं। अतः रचना में इतिहास बोध की अनुभूति इतिहास की संवेदनात्मक, रागात्मक तथा आवेगात्मक प्रतिक्रिया से उत्पन्न होती है।

कालजयी कृतियों में निहित इतिहास चेतना अतीत, वर्तमान व भविष्य के नये मार्ग खोलती है। ऐसी कालजयी कृतियां ही प्रामाणिक इतिहास बोध की पहचान का आधार होती हैं। इतिहास प्रक्रिया के विविध सोपानों एवम् पड़ावों की कंटकाकीर्ण पगडंडियों से गुजर कर ही कलाकृतियों में इतिहास बोध निर्मित होता है। रचनाकार द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में से गुजर कर ही इतिहास चेतना या इतिहास बोध का रचनान्तरण करता है। साहित्यकार इतिहास के मृत, उपेक्षित,दबे हुए सन्दर्भों का पुनर्वास करता है। इतिहास की नमी और उर्जा साहित्यकार की रचना को स्पन्दनशीलता प्रदान करती हैं जिससे उसकी रचनात्मकता प्रखर बनती हैं। साहित्यकार के वर्गीय संस्कार,जातीय चरित्र एवम् इतिहास प्रतिबद्धता ही उसके इतिहास बोध को नवीन आधार देती है। ऐतिहासिक तथ्यों का सही आकलन,विश्लेषण और उनका कलात्मक रूपान्तरण ही इतिहास बोध को अर्थवान बनाता है। इतिहास बोध की प्रामाणिक जानकारी ही कलाकृतियों को सार्वकालिकता प्रदान करती है ,कोई भी प्रतिबद्ध चिन्तक साहित्यकार इतिहास चेतना से असम्पृक्त नहीं रह सकता। इतिहास विवेक ही साहित्यकार के चिन्तन और संवेदना को गहन बनाता है।[7]रचनाकार अपनी रचनाओं में ऐतिहासिक सन्दर्भों को लाकर अतीत को समझते हुए उसकी विकासशीलता और ह्रासशीलता का मूल्यांकन करता है।लेखक के संस्कारों, अनुभवशीलता, संवेदनात्मक उद्देश्यों के अनुकूल ही इतिहास बोध की निर्मिति होती है। जो रचनाकार इतिहास के चतुर्दिक आयामों का निरीक्षण,परीक्षण व सर्वेक्षण करता है , इतिहास बोध रचनात्मक स्तर पर उतना ही प्रगाढ़,सम्पन्न व व्यापक बनता है। साहित्यकार अपनी इतिहास दृष्टि के द्वारा इतिहास बोध को परिपक्व बनाकर साहित्य में उनकी समझ दिखाकर अनेक मूल्यपरक रचनाएं हमारे सम्मुख रख देते हैं, वही रचनाएं विशिष्टताओं के कारण काल का अतिक्रमण करती हैं। इतिहास बोध एक अनन्त, अनवरत, सतत, गतिमान समय का प्रवाह है। इतिहास बोध सदैव रचनाकार की मदद करता है तथा उनकी महान रचनाएं अपने व्यापक अर्थ में अपने समाज का सटीक इतिहास बनती हैं।

रचना में पार्श्व की सर्जक स्थितियां और रचनाकार की सर्जक क्षमताएं एकरूप होकर एक अर्थ विशेष को उजागर करती है। परिवेश के यथार्थ को गहरी संवेदना के साथ व्यक्त करने वालों में कमलेश्वर का विशिष्ट स्थान है। बचपन में कमलेश्वर जी को जो परिवेश मिला,वह रूढ़िवादी व शोषण से परिपूर्ण था–'मां रात में ढाई तीन बजे उठकर हाथ में कपड़ा लपेटकर कुट्टी काटतीं, चक्की चलातीं, बर्तन धोती और सुबह होते होते नहा धोकर पुराने, जमींदार घराने की इज्जतदार मालकिन हो जातीं। मोहल्लेवालों के घावों पर मरहम लगातीं और रात को चुपचाप रोतीं।'[8] पिता का अभाव उन्हें जीवन भर सालता रहा अपने हम उम्र बच्चों को देखकर उनकी आंखें भर जाती–'यह सोचकर की पिता का प्यार मिल पाता तो शायद मेरे अधकचरे बचपन और किशोरवाय का सन्नाटा कुछ कम हो पाता, मुझे यह बताते कि दुनिया क्या है–इस दुनिया का दस्तूर क्या है–कि पिता के साथ मेले में जाने क्या–क्या सुख मिलता है।'[9] उनके लेखन का दौर 1952 से 1959 तक चला, जब वे मैनपुरी व इलाहाबाद में रहे। इस परिवेश की रचनाओं में राजा निरबंसिया, देवा की मां, भटके हुए लोग, एक सड़क सतावन गलियां आदि प्रमुख थी। इस दौर के उपन्यासों व कहानियों में कथ्य, शिल्प ,चरित्र च भाषा के भावों का सुमेल था। कमलेश्वर जी ने पात्रों के माध्यम से अपनी बात कहने का प्रयास किया।

उनके लेखन का दूसरा दौर 1959 से 1966 तक चला जब वे मैनपुरी छोड़कर दिल्ली में वासित हुए,तब दिल्ली का वातावरण, अनजानापन, अजनबियत का माहौल देखकर कमलेश्वर जी की सोच में बदलाव रेखांकित हुआ। इस दौर की कृतियों में नगरीय परिवेश को दर्शाते हुए नगर के जीवन की समस्याएं व मजबूरियों का बखूबी चित्रण हुआ।

बम्बई में बसने के दौरान तीसरा दौर 1966 से लेकर 1972 तक चला। इस विराट महानगर को खुली आंखों से देखते हुए इस नगर के सामाजिक जीवन, सभ्यता, शिक्षा, सिने संसार के परिवेश को महानगरीय वातावरण के रूप में चित्रित किया।

लेखन का चौथा दौर 1972 से 2007 तक का है जिसमें उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से समाज और देश की सेवा की। सुबह–दोपहर–शाम, वही बात, काली आंधी, आगामी अतीत फिर ऐतिहासिक उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' का आगाज़–––जिसने सफलता के परचम लहराये।

प्रत्येक दौर की अपनी विशिष्टताएं हैं जिससे कमलेश्वर जा का व्यक्तित्व प्रकाशमान हुआ है। यह द्रष्टव्य है कि कमलेश्वर की बुनियादी चरित्रांकन की दृष्टि समाजवादी है। साम्यवादी व मार्क्सवादी उनका एक उग्र रूप है। उनकी कठोरता के अभाव मे कोमल समाजवादी ज़िन्दा रहता है चूँकि उसमे लचक होती है। आँधी और तूफान में वही ज़िन्दा रहते हैं जिसमें लोच होती है।

'कितने पाकिस्तान कमलेश्वर जी की एक ऐतिहासिक रचना है जिसके लिए उन्हे 2003 मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। कमलेश्वर जी ने एक साक्षात्कार में सुरेश कोहली को बताया कि वह पिछले 30 वर्षों से इस उपन्यास के साथ रहते आये हैं ''इस विषय ने सदा मुझे परेशान किया है।''[10] 'कितने पाकिस्तान'

अपने समय से मुठभेड़ करने वाला एक महान उपन्यास है,जो हमे इस बात के लिए सजग करता है कि इतिहास के उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अवदान के सहारे ही हमारी साँझी सस्कृति की विरासत पूरी दुनिया के सामने मिसाल है और उसे बनाये रखना हमारी पहचान है।

कमलेश्वर जी के दीर्घ अन्तर्चिन्तन का परिणाम है:'कितने पाकिस्तान',इस उपन्यास से पूर्व उन्होंने एक सड़क सत्तावन गलियाँ,,डाक बगंला,लौटे हुये मुसाफिर,तीसरा आदमी,समुद्र में खोया हुआ आदमी,काली आँधी, वही बात, आगामी अतीत,सुबह–दोपहर–शाम,रेगिस्तान, अनबीता व्यतीत, अम्मा तथा कितने पाकिस्तान के बाद एक और चन्द्रकांता ,अंतिम सफर आदि की सृष्टि की।:'कितने पाकिस्तान'उनकी रचना यात्रा का एक नया प्रस्थान बिन्दु है, निजता की अभिव्यक्ति है, बदलते हुये विश्व की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में मानव जाति के विकास तथा पतन की दास्तान दर्ज़ है। नासिरा शर्मा के शब्दों में– ''यह उपन्यास कई कारणो से अहम है। जहाँ यह एक कहानी का लुत्फ देता है, वहीं पर बिना इतिहास के छात्र बनाए हमे अतीत से परिचय कराते हुए उस तारीख को बताता है, जिस ओर देखने की फुर्सत हम नहीं निकाल पाते, तीसरे मुर्दा और जिन्दा लोगो को एक धागे मे पिरोकर हमे ज्ञान और अनुभूतियों का ऐसा वैचारिक खजाना देता है जिसमे शताब्दियाँ साँस ले रही हैं, इस उपन्यास की विरासत है और इसके जिन्दा रहने का सुबूत भी।''[11] डॉ0 रामचन्द्र तिवारी के अनुसार– 'कितने पाकिस्तान' लेखक के दीर्घकालीन मंथन का परिणाम है। समय इतिहास उसके नायक हैं। लेखक ने मानवसभ्यता के लंबे इतिहास की गहरी पडताल करते हुये अनुभव किया है कि इतिहास ने प्रत्येक काल खण्ड में नफरत और घृणा ने इंसान को दो फाँकों में बाँटा है और पाकिस्तान बन रहे हैं। इसी का परिणाम है– देश का विभाजन।'[12] लेखक ने सांप्रदायिकता एवं आज की कलुषित राजनीति को अपने उपन्यास में दर्शाया है। नफरत के नाम पर आज विदेशों में पाकिस्तान बनने की कोशिश जारी है जिसका बखान करते हुये कमलेश्वर कहते हैं– ''लेकिन अब तो सब मुल्को मे नफरत का एक पाकिस्तान बनाने की कोशिश जारी है– क्या हुआ बोसनिया में, क्या हुआ साइप्रस में,क्या हुआ है तब के टूटे हुए सोवियत यूनियन और अब के बने रशियन फडेरेशन में क्या हो रहा है आज के अफगानिस्तान मे ? हर व्यक्ति नफरत के सहारे अपने ही लोगो के खिलाफ़ एक दूसरा पाकिस्तान ईजाद करना चाहता है।''[13] इस प्रकार नफरत से लोगों के दिलो में पाकिस्तान बनने आरंभ हो जाते हैं। ये नफरत जाति के रूप में भी हो सकती है। धर्म के रूप में भी और वर्ण के रूप में भी हो सकती है। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' मे आह्वान करते हुये कहा है– जितना जो कुछ टूट गया, उसे भूल जाओ। जो कुछ टूटने के बाद बचा है, उसे टूटने से बचाओ। जितने मुल्क बनेगें, वे सिर्फ इन्सान को तकसीम करेगें। जरूरत से ज्यादा इस दुनिया का बंटवारा हो चुका है– खुदा के लिए बंटवारे की इस जहानियत को खत्म करो।'[14]

कमलेश्वर जी हिन्दी, उर्दू, भाषा और साहित्य का मिला–जुला इतिहास लिखना चाहते थे।वह एक सक्रिय जिन्दादिल इन्सान थे। ''मेरी उम्र 72 साल नहीं 5072 साल है, क्योकि मैं दुनिया की प्राचीनतम एक बहुत बडी सभ्यता का वारिस हूँ। लेखक की कभी शाम नहीं होती। उसके पास सिर्फ सुबह और दोपहर होती है, और लेखक वही है जो बुझने के बाद भी रोशनी देता है।[15]

कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' में इतिहास की भरमार है। इसमें अनेक ऐतिहासिक पात्रों के द्वारा हर युग की समस्याएं हमारे सम्मुख प्रत्यक्ष होती है।वैदिक कालीन समाज से लेकर मध्यकालीन समाज और आज के असंस्कृत समाज तक विस्तार से इस उपन्यास में वर्णित है।इस उपन्यास में चित्रित सभी स्त्रियां व पुरुष दोहरे मानदण्ड के शिकार हैं।चाहे वह वैदिक युग की अहल्या हो या आधुनिक युग की सलमा। उपन्यास के पात्र अदीब को जब यह पता चलता है कि अहल्या द्वारा कोई अपराध न किये जाने पर भी गौतम ऋषि ने उसे दंड दिया था,तब अदीब कहता है–'इन ब्राह्मणों ने अपने श्रमजीवियों को शुद्र तो बनाया ही इन्होंने स्त्री को भी दंड देकर शुद्र की श्रेणी में डाल दिया।[16] इस घटना पर अर्दली महमूद प्रतिक्रिया व्यक्त करता है–'विलासी आर्यों ने औरत को हमेशा ही पुरुष की सम्पति माना है।[17]हिती सभ्यता के गिलगमेश देवदासी रूना को एकिन्दु को वश में कर लेने के लिए जंगल में भेजता है। वैदिक युग के सूर्य अपने भाई विश्वकर्मा की पुत्री को अपनी पत्नी बना रखा है। चन्द्र ने गुरु पत्नी तारा का अपहरण किया।[18] 'सप्त सिन्धु की आर्य सभ्यता भी अपने देवताओं को वश में करने के लिए अप्सराओं का उपयोग करती हैं।[19] इन वाक्यों से यह प्रतिध्वनित होता है कि पुराने ज़माने से लेकर आज तक नारी शोषण का शिकार बनती आई है।

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को सीमित दायरे में रहना पड़ता है। पुरुष वर्ग नारी को स्वार्थ सिद्धि हेतु व शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन मात्र के रूप में देखते हैं। राजनीतिज्ञों का नारी के प्रति अमानवीय व्यवहार मधुमिता शुक्ला की घटना में देख सकते हैं। कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में हिन्दू मुसलमान दोनों सम्प्रदायों में किये जाने वाले नारी शोषण व नारी की स्थिति पर प्रकाश डाला है। जब एक देश दूसरे देश पर आक्रमण करता है, तब सबसे अधिक शोषण नारियों का ही होता है। एक बिलकिस के माध्यम से अमानवीय शोषण का चित्र हमारे समक्ष कमलेश्वर जी ने विवेचित किया है कि बंगला देश के गठन के लिए जो युद्ध हुआ,उसमें नारियों का सैनिकों ने भूखे भेड़ियों की तरह शोषण किया। प्रत्येक मानव में यौन भूख प्रचुरता में विद्यमान होती है। सामाजिक मान्यताओं,मर्यादाओं के नियन्त्रण के कारण व्यक्ति यौन इच्छा का दमन करने का प्रयास करता है। आज मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि वह इन मर्यादाओं को दांव पर लगा देता है। कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में नारी शोषण के भीषण चित्र का अनावरण करके सामाजिक बोध की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।

कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में वर्णित द्वितीय विश्वयुद्ध के समय कोरियाई नारियों पर हुए अत्याचार को देखकर ऐसा लगता है कि मनुष्य मनुष्य नहीं एक जानवर है क्योंकि जानवर ही ऐसा सलूक कर सकता है –'मैं कोरियन हूं। तब मैं 17 साल की थी। वैसे मैं पैदा तो 1924 में जिलिन में हुई थी लेकिन 1941 में पड़े चुंग से जापानी फौजियों नें उठाया था और दूसरे महायुद्ध के दौरान जापानी सोलजियरों ने लगातार 98 बार प्रतिदिन बलात्कार किया।–––हम प्रतिदिन कम से कम पन्द्रह जापानी पाश्विक वासना को सहती और तृप्त करती थी।'[20]

समाज में जो कुछ घटित हो चुका है ,घटित हो रहा है, उनके दवाबों को इतिहास झेल रहा है। साम्प्रदायिकता का प्रश्न आज प्रबुद्ध जनों को बुरी तरह मथ रहा है।साम्प्रदायिकता धार्मिक कट्टरता और रूढ़िवाद का वह रूप है जिसमें एक धर्म के मतावलम्बी दूसरे धर्म के मतावलम्बी के प्रति विद्वेष का भाव रखते हैं।32 पंजाब समस्या, 1984 का सिक्ख विरोधी दंगा, अयोध्या विवाद,1988–1989 में साम्प्रदायिक तनाव, बावरी मस्जिद काध्वंस, गुजरात के दंगें साम्प्रदायिकता का लम्बा इतिहास हैं। विवेच्य उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि मैं कौन ,विनायक दामोदर सावरकर, पर आप तो राष्टवादी थे, हिन्दूवादी नहीं। वह पाकिस्तान का इकबाल भी राष्टवादी था, जिसने लिखा 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा' पर देखते देखते इन्सान शैतान में बदल गया। [21]

आज हमारा घर चीज़ों से भर गया है और आदमी का मूल्य घट गया है।शायद भारत सरकार को मानव की इस अवनति का दिग्दर्शन पूर्व ही था ,इसलिए 1994 में शिक्षा और संस्कृति के मंत्रालय का नाम बदलवही, पृ0 कर मानव संसाधन मंत्रालय रख दिया गया। नाम का यह परिवर्तन बड़ी निरीह घटना प्रतीत होता है। बाज़ारवाद के मूल में पूंजीवादी साम्राज्यवादियों की संगठित साजिश है। बाज़ारवाद पूंजीवाद का ही फलितार्थ है। कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में पूंजीवादी संस्कृति के स्वरूप को इस प्रकार व्यक्त किया है–' कोई भी संस्कृति पाकिस्तान के निर्माण के लिए जगह नहीं देती। संस्कृति अनुदार नहीं,उदार होती है। वह मरण का

उत्सव नहीं मनाती। वह जीवन के उत्सव की अनवरत श्रृंखला है———इसी सामासिक संस्कृति की हमें जरूरत है क्योंकि वह जीवन का सम्मान करती है।'[22]

यहां हमारी संस्कृति की गरिमा व्यक्त हुई है।सच्ची संस्कृति उदार है, अनुदार नहीं।ब्रिटिशों के शासन के बाद हमारी संस्कृति भी विकृत हो गई। कमलेश्वर जी ने इस उपन्यास में भूमंडलीकरण के प्रसंग को इस प्रकार प्रकट किया है–'हमारी नागरिकता अब अन्तर्राष्टीय हो गई है। ये देश अन्तर्राष्टीय मुद्रा कोश और विश्व बैंक से भीख मांगते हैं।'[23]

आज दुनिया के अनेक देश ऋण की जंजीरों में जकड कर सांस ले रहे हैं। भूमंडलीकरण की भयानक स्थिति को परख कर बहुसंख्यक लोगों को भिखमंगें बनाने वाली पूंजीवादी संस्कृति पर वार करते हुए कबीर के जरिए माउण्टबैटन को कहलवाया है–'हम भीखमंगों की नस्ल को तुम लुटेरों ने पैदा किया है। हम जैसे भिखारियों की नस्ल तुम्हारे इंडस्टियल रेवल्यूशन से पहले दुनिया के किसी देश में मौजूद नहीं थी। अमीर और गरीब पहले भी थे ।भिखारियों का जन्म उपनिवेशी बन्दोबस्त के साथ हुआ––तुम उपनिवेशवादियों ने हमारी दुआएं भी दोगली बना दी।' [24] ब्रिटिश शासन के समय हमारी अखंडता पर प्रश्न चिह्न लगाया गया।

बड़ी सभ्यताओं को निस्तेज करने का सबसे आसान तरीका है उसे अपनी संस्कृति से उखाड़ना। लूशुन के जरिए वर्तमान चीन में भूमंडलीकरण के उपरान्त की सांस्कृतिक तस्वीर खींचते हुए कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में लिखा है कि हमारी जाति को अकर्मण्य बना कर वे परछाइयां इन लुटेरों ने छीन ली हैं————हमें इन्होंने संस्कृति विहीन करना चाहा है। संस्कृति ही पूर्वजों की जीवित परछाइयों का संसार है।'[25] इस वाक्य से विदित होता है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने हमारे हकों को छीन लिया है। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि अपसंस्कृति को फैलाने वाले दुनिया को सभ्य बनाने का ढोंग रचते हैं। इस त्रासदी को लूशुन के जरिए इस प्रकार व्यक्त किया गया है कि 'सारी उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी सताएं खोखले नगाड़ों पर इन्सानी खाल के पल्ले मढ़कर नगाड़चियों की तरह घोषणा कर रही हैं कि उन्होंने असभ्य दुनिया को सभ्य बनाया हैं।'[26] वास्तव में यह अपसंस्कृति हमसे अस्मिता और स्वत्व को छीन लेती है। हम उनके इशारों पर नाचने वाली कठपुतली बन जाते हैं।

मानव मानव के बीच प्रेम, मित्रता, भाईचारा,समन्वयशीलता, अहिंसा,उदारता, मानवीयता जैसे सांस्कृतिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं। मानव संकीर्णता, घृणा, अहंकार, नस्ल, वर्ग, वर्ण के आधार पर बंटकर विनाश के गर्त में गिर रहे है। मानव मूल्यों के ह्रास होने पर भारत व पाकिस्तान का विभाजन हुआ। कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में मानवीय मूल्यों के ह्रास की स्थिति को इस प्रकार प्रकट किया है कि 'पूरी दुनिया में मानवाधिकारों का हनन हो रहा है। हिंसा,हत्या, कष्ट, उत्पीड़न, यातना, बेईमानी, बदकारी का सैलाब उमड़ रहा है, जो सुनाई पड़ता है, जो घटित हो रहा है, पर घटित होता दिखाई नहीं दे रहा है———यही हमारे समय की त्रासदी है क्योंकि हम मूल्यबोध के बावजूद मूल्यहीनता की चपेट में हैं।'[27]

सम्पूर्ण देशों में अलगाव की समस्या सांस्कृतिक संकट पैदा कर रही है। यह सिर्फ़ भारत की नहीं अपितु विश्व की समस्या है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 1947 में भारत व पाकिस्तान का अलगाव है जिसका यथार्थ वर्णन कमलेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में किया है–'अब ऐसे पागल लोग इस दुनिया में नहीं मिलते हैं———— अगर मिले होता तो सोवियत यूनियन नहीं टूटता, यूगोस्लाविया में बोस्निया के मुसलमानों का कत्लेआम न होता ,सोमालिया में बच्चे तड़प तड़प कर अकाल से न मरते। चार सौ फ़िलिस्तीनी इज़राइल की सरहद पर भूख व ठंड में पड़े मौत का इन्तज़ाम न करते और इज़राइली उन्हें मौत के मुंह में न खदेड़ते।'[28]

आज भारत जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर है। बढ़ती जनसंख्या के लिए रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध करवाने के लिए जंगलों को काटने की प्रक्रिया जारी है जिसका प्रभाव प्रकृति के साथ साथ मनुष्य के जीवन पर भी पड़ रहा है। महानगरों में यह स्थिति और भी भयावह हो गई है। महानगरों में लोहे ,सीमेंट का जंगल ही सांस्कृतिक संकट का रूप बन गया है।विवेच्य उपन्यास में अश्रुवैद्य अदीब की अदालत में कहता है–'सदियों से मैं यही कर रहा हूं–यही देख रहा हूं ,सदियों से मनुष्य प्रकृति का शोषण कर रहा है। प्रकृति बांझ हो गई।'[29] अदीब जब अस्पताल में भर्ती होता है तब सोचता है कि 'पड़े पड़े वह सोचने लगा कि इमारतें बड़ी ओर पेड़ छोटे। अब इमारतों की छाया में पेडों ने रहना सीख लिया है।'[30] कमलेश्वर जी ने मानव को समझाने की कोशिश की है कि वह अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रकृति का शोषण कर रहा है।

विवेच्य उपन्यास की मूल प्रेरकता मज़हबी साम्प्रदायिकता से वैश्विक समस्या के रूप में उत्पन्न क्षेत्रवाद,सम्प्रदायवाद, आतंकवाद के मूल बीज तलाशने में निहित है। कमलेश्वर जी ने पात्र परिकल्पना में नवीन प्रविधि का प्रयोग किया है। दारा शिकोह , अकबर, गिलगिमेश, कबीर आदि के चरित्र को लेखक ने सतर्कता से उभारा है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में गिलगिमेश, कबीर आदि के द्वारा मानव की मुक्तिकामी आकांक्षा की गूंज से मनुष्यता का नया इतिहास लिखने की कोशिश की गई है। गिलगिमेश की आवाज़–'सुनो ! देवताओं सुनो! पृथ्वी सम्राट गिलगिमेश की आवाज़! यह दूसरी आवाज़ है! यह भोग विलास और पशुवत दैहिक ऐश्वर्य की आवाज़ नहीं, यह मनुष्य की पीड़ा, दुख, यातना, श्रम और मृत्यु से मुक्त करने की आवाज़ है।———कुछ भी हो मैं अपने मित्र और मनुष्य मात्र के लिए मृत्यु को पराजित करूंगा। मैं मृत्यु से मुक्ति की औषधि खोज कर लाउंगा।'[31] इस उपन्यास के पात्र कबीर दिक्काल की सीमाओं को लांघकर वर्तमान संघर्षों में शरीक होकर अपने दायित्व निभाते हैं। कमलेश्वर जी ने आंखों से विहीन कबीर के द्वारा मानव समाज में घटित हो रहे सभी प्रकार के विषैले वातावरणों को मिटाने के लिए बोधि वृक्ष की उद्भावना की है कि बोधि वृक्ष की जड़ें नीलकंठ की तरह सारा विष पी लेती हैं।––पहला बोधि वृक्ष मैं पोखरन में लगााउंगा, फिर सरहद पार के दूसरा वृक्ष मैं चगाई की पहाड़ियों में लगाउंगा––तो मैं चलूं।'[32] इन वाक्यों के जरिए मानव समाज के भविष्य के प्रति आशावान दृष्टिकोण प्रतिबिम्बित होता है।

कमलेश्वर की 'कितने पाकिस्तान' कृति रोचक व पठनीय ही नहीं अपितु विचारोतेजक महागाथा है। उनका उद्देश्य समाज में व्याप्त समस्याओं, भ्रान्तियों, धर्मान्धता का परिचय देना है। आधुनिक दौर में सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं इस उपन्यास में मानवीय मूल्य प्राप्त करने के लिए समाज की सोच को विकसित करने का भी प्रयास किया गया है ,समाज के प्रति मानव के कर्तव्य को भी जताने की कोशिश की है। उनके अनुभव की प्रचण्ड व प्रखर व्यथा उनके अन्तर्मन को कुरेदती रही है। उसी व्यथा से पाठकों को परिचित करवाना कमलेश्वर जी का निहितार्थ है। उनके लेखन का उद्देश्य स्पष्ट है :मेरे लिए लेखन एक माध्यम है,मंजिल नहीं। मेरी मंजिल अपने समय की अभावग्रस्त, शापग्रस्त दुनिया को शापों से मुक्त देखने की है।

यह एक ऐसी रचना है जिसमें दुनिया के होते बंटवारों पर चिन्ता व्यक्त की गई है। वीरेन्द्र सक्सेना जी ने लिखा है –''कितने पाकिस्तान' जैसे प्रतीकात्मक शीर्षक के अनुकूल पूरे विश्व के इतिहास और संस्कृति को समेटते हुए आदमी व आदमी के बीच बंटवारे व भेदभाव को प्रस्तुत कर पाना एक कठिन काम था लेकिन कमलेश्वर जी ने अदीब के नायकत्व में संभव कर दिखाया।'[33] अमृता प्रीतम जी ने 'कितने पाकिस्तान' के उद्देश्य को स्पष्ट किया है कि कमलेश्वर मज़हब का नाम लेकर इन्सान को गुलाम बनाने वाली ताकतों ,नफ़रत सिखाने वाली ताकतों, कत्लो खून लाज़मी कर देने वाली ताकतों को लोगों के सामने रखा है ताकि लोग जागें––नही तो जाने कहां कहां कितने कितने पाकिस्तान बनने होंगे।'[34] वस्तुतः कमलेश्वर जी ने इस उपन्यास में गागर में सागर भर दिया है।

वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति के मानस में सामाजिक जीवन इतिहास बोध के रूप में समाहित होता है। जब साहित्यकार अपने अनुभवों और दूसरों के अनुभवों को घटना प्रधान मानकर विशेषकर अपनी रचना में रूपान्तरित करे तब साहित्य श्रेयस्कर बनता है। कमलेश्वर जी

का उपन्यास अतीत के साथ वर्तमान के भी दर्शन करवाता है,साथ साथ भविष्य की संभावनाओं की ओर भी संकेत करता है। इसी प्रकार कमलेश्वर जी भी आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके कृतित्व के माध्यम से उनके विचार, मूल्य एवं उनका दर्शन आज भी हमारे पास है। कमलेश्वर जी का जीवन–दर्शन हमारे लिए उस रोशनी के समान है जो भटके हुये लोगो ंको राह दिखाने मे ंमदद करे। इस उपन्यास में चित्रित घटनाएं निरन्तरता का बोध करवाती हुई इतिहास बोध को जगाती हैं। संभवतः कमलेश्वर जी का 'कितने पाकिस्तान'उपन्यास मनुष्यता का नया इतिहास लिखने की कोशिश में बेचैन प्रतिबिम्बित होता है, इसी में कमलेश्वर जी की सार्थकता व प्रासंगिकता निहित है। कमलेश्वर जी कहते थे उनकी उम्र 72 वर्ष नहीं अपितु 5072 वर्ष है, क्योंकि मनुष्य की मृत्यु होती है परन्तु विचारों की मृत्यु कभी नहीं होती और कमलेश्वर जी के विचार भी इसी प्रकार हमेशा चिरंतन रहेगें।

संदर्भ ग्रथं

1. वीरेन्द्र मोहन, इतिहास और संस्कृति, पृ 152।
2. प्रेमचन्द कुछ विचार, पृ 69।
3. नामवर सिंह,इतिहास और आलोचना,पृ 146।
4. राजेश्वर सक्सेना, इतिहास विचारधारा और साहित्य, पृ20।
5. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास दृष्टि,पृ 197।
6. राकेश कुमार, समकालीन कविता और इतिहास बोध, पृ 18।
7. नामवर सिंह,इतिहास और आलोचना,पृ 144।
8. कमलश्वेर, गर्दिश के दिन, पृ0 152।
9. कमलश्वेर, अपनी निगाह में, पृ0 56।
10. सं प्रदीप मांडप, सुरेश कोहली से कमलेश्वर की बात,पृ 175।
11. आलोक मेहता, आउटलुक नासिरा शर्मा,पृ 42।
12. डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, पृ0 231
13. कमलश्वेर, कितने पाकिस्तान, पृ0 93।
14. वही, पृ0 153।
15. वही, पृ0 283।
16. वही, पृ0 21।
17. वही, पृ0 20।
18. वही, पृ0 32।
19. वही, पृ0 34।
20. वही, पृ0 89।
21. वही, पृ0 111।
22. वही, पृ0 289।
23. वही, पृ0 280।
24. वही, पृ0 283।
25. वही, पृ0 283।
26. वही, पृ0 293।
27. वही, पृ0 201।
28. वही, पृ0 107।
29. वही, पृ0 110।
30. वही, पृ0 354।
31. वही, पृ0 35।
32. वही, पृ0 363।
33. वीरेन्द्र सक्सेना, नव उतरगाथा,सं कुंवरपाल सिंह,पृ 144।
34. अमृता प्रीतम, नव उतरगाथा, सं कुंवरपाल सिंह, पृ 87।

Net sources

1. www.bharatdarshan.co.nz/.../kamleshwar-hindi-writer
2. en.wikipedia.org/wiki/Kamleshwar
3. www.goodreads.com/author/show/287786.Kamleshwar
4. timesofindia.indiatimes.com/india/Kamleshwar-left-Hindi.../1502404.cm.
5. https://www.scribd.com/doc/12581579/Kamleshwar
6. www.veethi.com › People › Literature
7. www.ftiipeople.com ›
8. www.mapsofindia.com › Who is Who › Literaturmediacenterimac.com/
9. kamleshwar-prasad/soleillescowork.com/
10. kitne-pakistan-by-kamleshwar.htmsahitya-akademi.gov.in › Home › Literaray Activities
11. eco-pochi.jp/kitne-pakistan-by-kamleshwar.htm
12. www.outlookindia.com/article/The-Light-Shall-Shine-On/220781